नवनीत

(2025–2026)

उत्कृष्टता के पथ पर लखनऊ विश्वविद्यालय की यात्रा

लखनऊ विश्वविद्यालय

सत्यमेव जयते

अनुक्रमणिका

1.	श्रेष्ठ शैक्षिक परिणामों के लिए प्रयास	01
2.	शोध लचीलापन और सुदृढ़ीकरण	04
3.	उन्नत वैश्विक जुड़ाव	10
4.	मानव पूंजी को सुदृढ़ करना	10
5.	भावी छात्रों को जोड़ना और प्रवेश मानक	12
6.	छात्र क्षमता को निखारना और कल्याण पहल	13
7.	छात्र संवर्धन पहल	17
8.	परीक्षा और मूल्यांकन सुधार	21
9.	आईसीटी पहल और डिजिटल गवर्नेंस	22
10.	प्रशासनिक सुधार और नई नीतियां	24
11.	सम्बद्ध महाविद्यालयों से संबंध और वित्तीय सुदृढ़ीकरण	28
12.	वित्तीय स्थिति को मजबूती प्रदान करना	29
13.	सामुदायिक जुड़ाव को मजबूत करना	30
14.	रैंकिंग और मान्यता	32

लखनऊ विश्वविद्यालय
वार्षिक विवरण और उपलब्धियां (2025–2026)

1. श्रेष्ठ शैक्षिक परिणामों के लिए प्रयास

औद्योगिक विकास और उच्च शिक्षा किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति के केंद्र में होते हैं। औद्योगिक क्रांति के बाद से, कार्य लगातार शारीरिक श्रम से तकनीक–संचालित प्रक्रियाओं की ओर स्थानांतरित हुआ है। इस परिवर्तन ने एक ऐसे कार्यबल की मजबूत मांग पैदा की है जो उभरती प्रौद्योगिकियों में सक्षम और कुशल दोनों हो। उद्योग 4.0, जो स्वचालन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A.I) और स्मार्ट प्रणालियों द्वारा चिह्नित है, ने उच्च शिक्षा संस्थानों को अनुकूलित करने की आवश्यकता पर और अधिक बल दिया है। शिक्षा 5.0 भविष्य की कार्यबल मांगों के लिए छात्रों को तैयार करते हुए और व्यापक सामाजिक परिवर्तनों को संबोधित करते हुए गतिशील शिक्षण और सीखने के वातावरण का निर्माण करके इस चुनौती का जवाब देती है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) एक व्यापक, बहु–विषयक दृष्टिकोण के माध्यम से इस दृष्टिकोण को दर्शाती है। यह लचीले और समग्र शिक्षण को बढ़ावा देती है, रोजगार क्षमता को बढ़ाती है और मानव संसाधनों की गुणवत्ता को मजबूत करती है। NEP 2020 के अनुरूप, लखनऊ विश्वविद्यालय ने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने, समावेशिता को बढ़ावा देने और सामाजिक तथा आर्थिक गतिशीलता का समर्थन करने के लिए विभिन्न पहलों की शुरुआत की है। इन उपायों का उद्देश्य एक मजबूत शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है जो तेजी से विकसित हो रही वैश्विक अर्थव्यवस्था में छात्रों को सफल होने के लिए तैयार करने के साथ–साथ राष्ट्रीय विकास में भी योगदान दे।

1.1 अकादमिक विकास और विविधीकरण

NEP 2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप, लखनऊ विश्वविद्यालय ने सक्रिय रूप से अंतःविषय, पार–विषयक, आधुनिक और शास्त्रीय क्षेत्र में फैले पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला की शुरुआत की है। इस शैक्षणिक विविधीकरण का उद्देश्य विषयों के बीच कठोर सीमाओं को तोड़ना है, जिससे अधिक एकीकृत और समग्र शिक्षण वातावरण को बढ़ावा मिल सके। व्यावसायिक और सह–पाठ्यचर्या पाठ्यक्रमों की शुरुआत के साथ अब शैक्षणिक धाराओं के बीच के अवरोधों को तोड़ा जा रहा है। यह समावेशी पाठ्यक्रम न केवल भारत की समृद्ध बौद्धिक विरासत का सम्मान करता है, बल्कि छात्रों को आधुनिक दक्षताओं से भी लैस करता है, जिससे वे गतिशील करियर पथ और सार्थक सामाजिक योगदान के लिए तैयार होते हैं। बहु–विषयक शिक्षा और अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए, अगले शैक्षणिक सत्र के लिए नए कार्यक्रमों को मंजूरी दी गई है।

1.1.1 स्नातक कार्यक्रम

- बी.ए. (सांख्यिकी, अर्थशास्त्र और कंप्यूटर विज्ञान)
- बी.बी.ए. एलएल.बी.
- बी.सी.ए. (एआई और मशीन लर्निंग)
- बी.सी.ए. (डेटा साइंस और एनालिटिक्स)

- बी.सी.ए. (साइबर सुरक्षा और फोरेंसिक)
- बी.सी.ए. (इंटरनेट ऑफ थिंग्स)
- बी.एससी. कंप्यूटेशनल एस्ट्रोफिजिक्स
- बैचलर ऑफ होटल मैनेजमेंट एंड कैटरिंग टेक्नोलॉजीज

1.1.2 अपरेंटिसशिप एंबेडेड डिग्री प्रोग्राम

- बी.कॉम. (रिटेल मैनेजमेंट)
- बी.कॉम. (ई–कॉमर्स)
- बी.कॉम. (बैंकिंग, वित्तीय सेवाएं और बीमा)

1.1.3 स्नातकोत्तर कार्यक्रम

- एम.ए. (पौरोहित्य)
- एम.ए. (वास्तु शास्त्र)
- एम.ए. (पोषण विज्ञान)
- एम. फार्मा. (फार्मास्यूटिक्स)
- एम. फार्मा. (फार्माकोलॉजी)
- एम. फार्मा. (फार्मास्यूटिकल प्रबंधन)
- एम.एससी. (वन्यजीव विज्ञान)
- एम.एससी. (एआई और मशीन लर्निंग)
- एम.एससी. (डेटा साइंस और एनालिटिक्स)
- एम.एससी. (साइबर सुरक्षा और फोरेंसिक)

1.1.4 डिप्लोमा और पीजी डिप्लोमा कार्यक्रम

- डिप्लोमा (टूरिज्म एंड कल्चरल हेरिटेज ऑफ इंडिया)
- पीजी डिप्लोमा (नेशनल रिसोर्सेज एंड गवर्नेंस)
- पीजी डिप्लोमा (साइबर सिक्योरिटी)

1.1.5 माइनर डिग्री कार्यक्रम

- सामाजिक विज्ञान और डेटा विश्लेषण
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव व्यवहार
- साइबर नीति और डिजिटल शासन
- अनुप्रयुक्त दर्शन
- प्राचीन भारतीय इतिहास और प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा पुरातत्व
- पत्रकारिता और रचनात्मक लेखन जनसंचार
- मानव शास्त्र और फोरेंसिक विज्ञान
- समाज कार्य अभ्यास में कौशल

- सामुदायिक और स्वास्थ्य शिक्षा
- जनसंख्या अध्ययन और ग्रामीण विकास
- अपराध निवारण, फोरेंसिक और आपराधिक न्याय प्रशासन
- सतत आर्थिक विकास में आर्थिक व्यवसाय प्रशासन
- अनुप्रयुक्त हिंदी
- फलित ज्योतिष
- एआई और मशीन लर्निंग
- डेटा साइंस
- औद्योगिक नियंत्रण और ड्राइव सिस्टम
- बिजली और ऊर्जा प्रणालियां
- मशीन डिजाइन
- उन्नत विनिर्माण प्रौद्योगिकी
- वीएलएसआई डिजाइन और प्रौद्योगिकी
- पर्यावरण इंजीनियरिंग

1.1.6 सह–पाठ्यचर्या और व्यावसायिक पाठ्यक्रम

- श्रीमद्भगवद्गीता फॉर होलिस्टिक वेल बीइंग
- श्रीमद्भगवद्गीता फॉर नेविगेटिंग कंटेम्परेरी चैलेंजेस
- भारतीय नाट्यशास्त्र
- भारतीय सौंदर्यशास्त्र
- एआई फॉर आल

1.2 संकाय के साथ संस्थानों का एकीकरण

- विश्वविद्यालय के सभी संस्थानों को उपयुक्त संकायों के तत्वावधान में लाया गया है, जिससे अधिक शैक्षणिक एकीकरण और प्रशासनिक समन्वय सुनिश्चित हो सके।
- यह पुनर्गठन संबंधित शैक्षणिक विषयों के साथ संस्थानों के घनिष्ठ तालमेल की सुविधा प्रदान करता है, जिससे अंतःविषय सहयोग, संसाधन साझाकरण और शैक्षणिक तालमेल को बढ़ावा मिलता है।
- नई व्यवस्था शैक्षणिक निरीक्षण और शासन को मजबूत करती है, जिससे शिक्षण, अनुसंधान और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों का अधिक प्रभावी समन्वय संभव होता है।

2. शोध लचीलापन और सुदृढ़ीकरण

पिछले पांच वर्षों में, लखनऊ विश्वविद्यालय ने अपने शोध प्रदर्शन में महत्वपूर्ण प्रगति की है, जो शैक्षणिक उत्कृष्टता और नवाचार के प्रति उसकी मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह प्रगति नई शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों के अनुरूप है, जो उच्च गुणवत्ता वाले, प्रभावशाली और बहु–विषयक शोध पर जोर देती है।

विश्वविद्यालय ने शोध–अनुकूल नीतियां लागू की हैं, बुनियादी ढांचे में निवेश किया है, और प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिए शिक्षकों व शोधकर्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिए योजनाएं शुरू की हैं। इससे शोध आउटपुट, और वैश्विक दृश्यता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में यह बढ़त दिखाती है कि, विश्वविद्यालय अपनी स्थिति में लगातार सुधार कर रहा है। केंद्रीकृत शोध सुविधाएं स्थापित करने, स्नातक स्तर पर छात्र शोध को बढ़ावा देने और अंतःविषय परियोजनाओं को प्रोत्साहित करने के प्रयास इसके शोध पारिस्थितिकी तंत्र को और मजबूत कर रहे हैं। इन पहलों के माध्यम से, लखनऊ विश्वविद्यालय ज्ञान सृजन और विद्वत्तापूर्ण योगदान के लिए एक जीवंत और समावेशी वातावरण तैयार कर रहा है।

2.1 डॉक्टरेट अध्ययन में अकादमिक सुधार

2.1.1 संशोधित पीएच.डी. अध्यादेश–2026

- **द्विवार्षिक पीएच.डी. प्रवेशः** पीएच.डी. प्रवेश वर्ष में दो बार आयोजित किए जाएंगे।
- **तीन चरणों में प्रवेशः** प्रवेश तीन चरणों में होंगे;
    - चरण 1: जेआरएफ (CSIR और UGC) का चयन साक्षात्कार के माध्यम से किया जाएगा।
    - चरण 2: नेट और पीएच.डी. पात्र (UGC और CSIR के माध्यम से) अभ्यर्थियों का चयन साक्षात्कार के माध्यम से किया जाएगा।
    - चरण 3: शेष सीटें, यदि कोई रिक्त हों, प्रवेश परीक्षा के माध्यम से भरी जाएंगी, जिसमें साक्षात्कार के दौरान फेलोशिप धारकों को वरीयता दी जाएगी।
- **अंशकालिक मोड में परिवर्तनः** शोध के दौरान सरकारी रोजगार प्राप्त करने वाले पूर्णकालिक शोधार्थी अपनी पढ़ाई बंद किए बिना अंशकालिक मोड में परिवर्तित हो सकते हैं।
- **डिजिटल थीसिस सबमिशनः** शोधार्थियों को केवल पीडीएफ प्रारूप में थीसिस जमा करना आवश्यक है, जिससे मुद्रित प्रतियों की आवश्यकता समाप्त हो गई है।
- **साक्षात्कार की वीडियो रिकॉर्डिंगः** प्रवेश प्रक्रिया में पारदर्शिता, निष्पक्षता, जवाबदेही और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए सभी पीएच.डी. प्रवेश साक्षात्कारों की वीडियो रिकॉर्डिंग अनिवार्य है।
- **संबद्ध कॉलेजों में शोध केंद्रः** संबद्ध और सहायता प्राप्त कॉलेजों में मान्यता प्राप्त केंद्रों की स्थापना शुरू की गई है, जिससे शोध गतिविधियों का विकेंद्रीकरण होगा और क्षेत्रीय बुनियादी ढांचे को मजबूती मिलेगी।
- **शोध सुविधाओं की निगरानीः** संबद्ध कॉलेजों में सुविधाओं की देखरेख करने, बुनियादी ढांचे के इष्टतम उपयोग को बढ़ावा देने और संस्थानों के बीच उन्नत उपकरणों और प्रयोगशालाओं को साझा करने को प्रोत्साहित करने के लिए एक समर्पित समिति का गठन किया गया है।

- **थीसिस में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का दस प्रतिशत से अधिक उपयोग नहीं:** शोधार्थियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनकी थीसिस में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) उपकरणों का उपयोग दस प्रतिशत से अधिक न हो, जिससे मौलिकता, शैक्षणिक अखंडता और विद्वत्तापूर्ण योगदान की प्रामाणिकता की रक्षा की जा सके।
- **शोध अखंडता को बढ़ावा:** विश्वविद्यालय ने न केवल पीएच0डी0 बल्कि स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर भी शैक्षणिक अखंडता को बनाए रखने के लिए टर्निटिन (Turnitin) साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाले सॉफ्टवेयर की सदस्यता ली है।

2.2 इंटर्नशिप और शोध प्रबंध कार्यक्रम

- लखनऊ विश्वविद्यालय के स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के साथ–साथ अन्य विश्वविद्यालयों और संस्थानों के छात्रों के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर एक संरचित इंटर्नशिप, प्रशिक्षण और शोध प्रबंध कार्यक्रम की शुरुआत की गई है।
- शिक्षक पर्यवेक्षण के अधीन प्रयोगशाला कार्य, फील्ड अध्ययन, केस विश्लेषण, रचनात्मक अभ्यास, आंकड़ा विश्लेषण और विषय–विशिष्ट व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से अनुभवात्मक और शोध–उन्मुख शिक्षण के अवसर प्रदान करना।
- लचीली कार्यक्रम अवधि और मोड, जिसमें अल्पकालिक इंटर्नशिप, दीर्घकालिक प्रशिक्षण/शोध प्रबंध कार्य और ऑफलाइन, ऑनलाइन या हाइब्रिड प्रारूपों में आयोजित अंतःविषय परियोजनाएं शामिल हैं।
- गुणवत्तापूर्ण परामर्श, पर्याप्त बुनियादी ढांचा और आंतरिक व बाहरी छात्रों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए योग्यता आधारित चयन और परिभाषित संकाय पर्यवेक्षण सीमाएं लागू की गई हैं।
- आवेदन, उपस्थिति, निगरानी, रिकॉर्ड रखरखाव और प्रमाणन के लिए एक व्यवस्थित व्यवस्था शोध की स्थापना, जिसके रिकॉर्ड विभाग और संकाय दोनों स्तरों पर बनाए रखे जाएंगे।
- छात्रों की अनुसंधान अभिरुचि, व्यावहारिक कौशल और व्यावसायिक दक्षताओं में वृद्धि, जिससे उच्च शिक्षा, अनुसंधान, उद्यमिता, सार्वजनिक सेवा और उद्योग के लिए उनकी तैयारी मजबूत होगी।

2.3 शोध अनुदान और प्रकाशन

पिछले शैक्षणिक वर्ष में शोध वित्तपोषण में 12.26 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जो शैक्षणिक और वैज्ञानिक प्रयासों का समर्थन करने के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। यह वृद्धि हमें अपनी शोध क्षमताओं का विस्तार करने, नवीन परियोजनाओं को आगे बढ़ाने और बुनियादी ढांचे को बढ़ाने में सक्षम बनाती है।

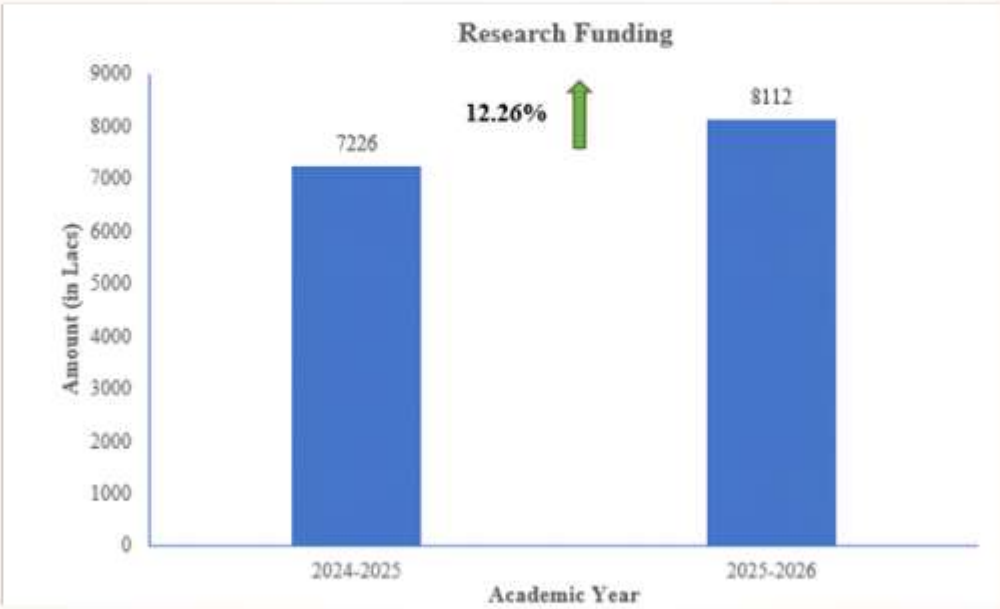

2.4 विश्वविद्यालय ने अपने अनुसंधान आउटपुट में उल्लेखनीय प्रगति देखी है। विद्वत्तापूर्ण प्रकाशनों में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ शोध पत्रों के प्रकाशन में 17.51 प्रतिशत (1548 से बढ़कर 1819) और पुस्तकों के प्रकाशन में 5.10 प्रतिशत (98 से बढ़कर 103) की वृद्धि हुई है।

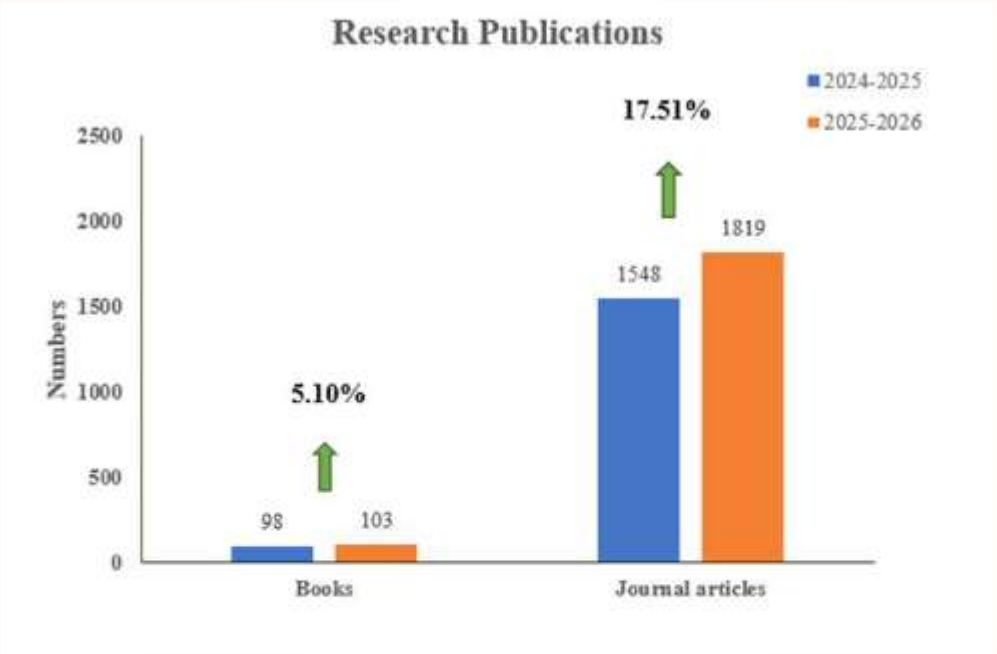

2.5 Scopus डेटा के अनुसार, विश्वविद्यालय के 8407 प्रकाशनों को 151,040 बार उद्धृत किया गया है, जो इसके बढ़ते H-Index और वैश्विक शैक्षणिक स्थिति को दर्शाता है।

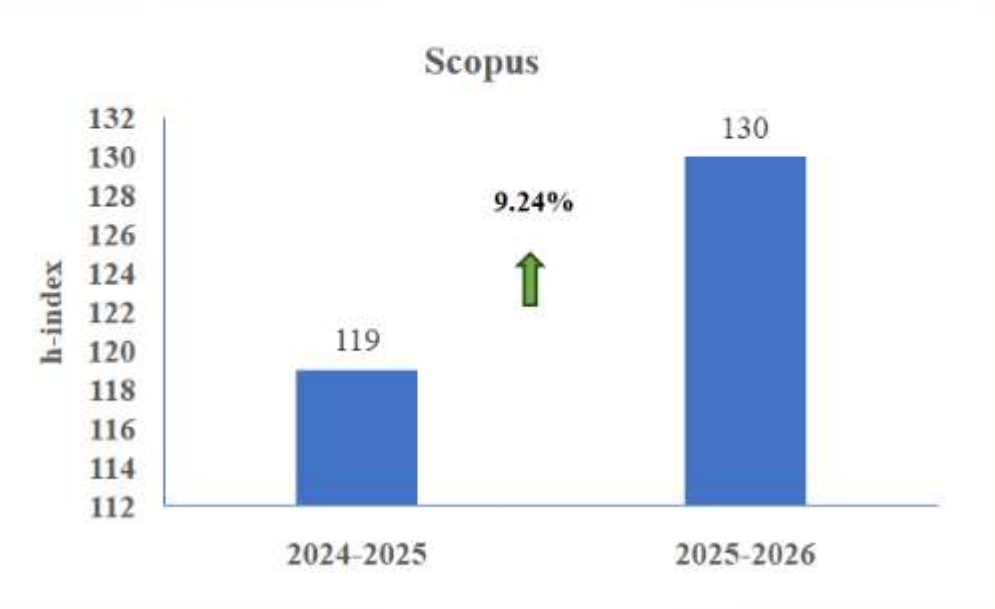

2.6 शैक्षणिक संवाद की गतिविधियां

विश्वविद्यालय अपने छात्रों को एक अद्वितीय शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने के लिए समर्पित है। यह छात्रों को शिक्षा, विस्तार गतिविधियों, प्रौद्योगिकी, अनुवाद आदि क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रतिष्ठा वाले प्रतिष्ठित विद्वानों से मिलने के अवसर प्रदान करके प्राप्त किया जाता है।

2025–26 में, विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक, सांस्कृतिक और आउटरीच कार्यक्रमों के एक जीवंत कैलेंडर के माध्यम से खुद को अलग पहचाना, जिसने विद्वत्ता, रचनात्मकता और छात्र जुड़ाव के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया। वर्ष की शुरुआत 'शब्द यात्रा' कार्यक्रम के साथ हुई, जो एक साहित्यिक उत्सव था जिसने हिंदी भाषा और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को पोषित करने में विश्वविद्यालय की भूमिका को सुदृढ़ किया। एक प्रमुख आकर्षण अंतर्राष्ट्रीय योग माह (2026) था, जिसमें कल्याण और भारतीय ज्ञान परंपराओं को बढ़ावा देने वाले सेमिनार, कार्यशालाएं और जागरूकता अभियान शामिल थे। विदुषी सम्मेलन शक्ति स्फुरित ने महिला सशक्तिकरण और विद्वत्ता को सबसे आगे रखा। प्रबंधन अध्ययन संकाय ने एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी की, जिससे अंतःविषय शोध और नवाचार को बढ़ावा मिला। मॉडल यूनाइटेड नेशंस कॉन्फ्रेंस जैसी छात्र–नेतृत्व वाली पहलों ने कूटनीति और बहस के लिए मंच प्रदान किया, जबकि हिंदी दिवस पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन ने साहित्यिक विरासत का जश्न मनाया। एक समकालीन पहलू जोड़ते हुए, विश्वविद्यालय ने जनरेटिव एआई के साथ इंजीनियरिंग रचनात्मकता पर एक सेमिनार आयोजित किया, जो अत्याधुनिक तकनीक को अपनाने के इसके दृष्टिकोण को दर्शाता है। एक साथ मिलकर, इन आयोजनों ने परंपरा और आधुनिकता का एक गतिशील मिश्रण बनाया, जिससे विश्वविद्यालय सांस्कृतिक जीवंतता, शैक्षणिक उत्कृष्टता और वैश्विक प्रासंगिकता के केंद्र के रूप में स्थापित हुआ। इन आयोजनों ने विश्वविद्यालय के समग्र दृष्टिकोण को भी रेखांकित किया, छात्रों को सशक्त बनाया, समुदायों को जोड़ा और राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय विमर्श में सार्थक योगदान दिया।

'महाकवि जयशंकर प्रसाद साहित्य एवं संस्कृति उत्सव 2026' विश्वविद्यालय में 'महाकवि जयशंकर प्रसाद साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव 2026' भारतीय साहित्य, कला और सांस्कृतिक विरासत का एक ऐतिहासिक उत्सव था। पेंटिंग कैंप और प्रदर्शनी, एक राष्ट्रीय संगोष्ठी और एक सांस्कृतिक संध्या से सुसज्जित, इसने एक जीवंत वातावरण बनाया जिसने साहित्य, कला और संस्कृति को एकजुट किया। इस उत्सव ने छात्रों, कलाकारों और लेखकों को प्रेरित किया, भारतीय सौंदर्यशास्त्र और विचार की स्थायी प्रासंगिकता को उजागर किया, और यह याद दिलाने का काम किया कि साहित्य और कला किस प्रकार सामूहिक चेतना और भावी पीढ़ियों को आकार देना जारी रखती है। भारत की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी वैज्ञानिक समितियों में से एक, भारतीय गणित परिषद का एक सम्मेलन लखनऊ विश्वविद्यालय के गणित विभाग द्वारा आयोजित किया गया था।

जियोकॉन–2026 में, विश्वविद्यालय ने भूविज्ञान और जलवायु परिवर्तन पर दो दिवसीय शिखर सम्मेलन की मेजबानी की, जिसमें मुख्य भाषण, तकनीकी सत्र और इंटरैक्टिव चर्चाएं शामिल थीं। प्रख्यात वैज्ञानिकों ने ग्लोबल वार्मिंग, हिमालयी भूस्खलन, महासागर आधारित अर्थव्यवस्थाओं और ऊर्जा सुरक्षा जैसे मुद्दों को संबोधित किया, जबकि शोधकर्ताओं ने क्रस्टल इवोल्यूशन, भूजल और टिकाऊ प्रौद्योगिकियों जैसे विषयों पर 200 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए। पोस्टर प्रदर्शनियों, पैनल चर्चाओं और प्रश्नोत्तर सत्रों ने शैक्षणिक आदान–प्रदान को और बढ़ाया, जिससे विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं और छात्रों के लिए एक सहयोगात्मक वातावरण तैयार हुआ। इस आयोजन ने स्थिरता और हरित ऊर्जा की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया, जिससे जियोकॉन–2026 भूविज्ञान अनुसंधान और जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बन गया।

सम्मेलन, सेमिनार, व्याख्यान आदि के रूप में कुल 324 शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

BOTANY
CHEMISTRY

3. उन्नत वैश्विक जुड़ाव

लखनऊ विश्वविद्यालय की वैश्विक स्तर पर बढ़ती भागीदारी निस्संदेह उसके अंतर्राष्ट्रीयकरण और वैश्विक पहचान की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। पिछले कुछ वर्षों से विश्वविद्यालय ने अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग बढ़ाकर, शैक्षणिक आदान–प्रदान कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देकर तथा अन्तर्राष्ट्रीय शोध परियोजनाओं में सक्रिय भागीदारी निभाकर अपनी वैश्विक उपस्थिति का विस्तार करने के ठोस और सार्थक प्रयास किए है।

3.1 लखनऊ विश्वविद्यालय के बढ़ते वैश्विक आकर्षण और अंतर्राष्ट्रीयकरण के परिणाम स्वरूप इस शैक्षणिक वर्ष में पूर्णकालिक डिग्री कार्यक्रमों के लिए निम्नलिखित सफलताएं अर्जित की हैं:

- 77 देशों से 3421 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं।
- वर्तमान में 45 नए देशों के छात्र विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय आवेदनों में 64 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

3.2 अंतर्राष्ट्रीय समझौते:

- यूनिवर्सिटी डी परपिग्नन, फ्रांस के साथ स्नातक स्तर पर जीव विज्ञान और स्नातकोत्तर स्तर पर प्राणीशास्त्र के छात्रों तथा शिक्षक आदान–प्रदान के लिए समझौता।
- लुंबिनी टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी और लखनऊ विश्वविद्यालय के बीच शैक्षणिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए समझौता।
- काठमांडू लॉ स्कूल और लखनऊ विश्वविद्यालय के विधि संकाय के बीच समझौता।

4. मानव पूंजी को सुदृढ़ करना

विश्वविद्यालय ने अपने शिक्षण और गैर–शिक्षण कर्मचारियों को प्रभावी और कुशल बनाने के लिए नियुक्तियों और पदोन्नति के मुद्दों को प्राथमिकता दी है।

4.1. शिक्षकों की संख्या में वृद्धि

विश्वविद्यालय ने एडजंक्ट फैकल्टी और प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस की नियुक्ति का प्रावधान किया है, जिससे प्रतिष्ठित पेशेवरों और शिक्षाविदों की संरचित सहभागिता सुनिश्चित हो सके। यह पहल संकाय

संसाधनों को मजबूत करती है और शिक्षक–छात्र अनुपात में सुधार करती है, जिससे शैक्षणिक गुणवत्ता और संस्थागत क्षमता में वृद्धि होती है।

4.1.1. एडजंक्ट फैकल्टी

- शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान में प्रतिष्ठित शिक्षाविदों, पेशेवरों और उद्योग विशेषज्ञों को शामिल करना।
- पाठ्यक्रम और कौशल विकास को समृद्ध करने के लिए शिक्षा जगत और उद्योग के बीच सहयोग को मजबूत करना।
- मेंटरिंग और शोध मार्गदर्शन के लिए सेवानिवृत्त शिक्षकों और प्रतिष्ठित पेशेवरों को जोड़ना।
- कार्यशालाओं और व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से पारंपरिक, कौशल–आधारित और शोध पाठ्यक्रमों में योगदान देना।
- संस्थागत सेवाओं, छात्र परामर्श और उद्योग संपर्कों के लिए सक्रिय सहायता प्रदान करना।
- नियुक्त एडजंक्ट फैकल्टी के गुणवत्तापूर्ण परिणामों को सुनिश्चित करने के लिए छात्र प्रतिक्रिया (फीडबैक) और संरचित रिपोर्टिंग के माध्यम से उनके प्रदर्शन की निगरानी की जाएगी।

4.1.2. प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस

- पाठ्यक्रम विकास, विशेषज्ञ एकीकरण और अनुभवात्मक शिक्षण के लिए उद्योग और पेशेवर विशेषज्ञता का उपयोग करना।
- अपने संबंधित क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले प्रतिष्ठित विशेषज्ञों को नियोजित किया जाएगा।
- रोजगार की अवधि एक वर्ष से लेकर 4 वर्ष तक होगी।
- छात्र प्रतिक्रिया के अधीन हर साल नवीनीकरण।
- सहभागिता की श्रेणियाँ:
  - उद्योग–वित्तपोषित प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस
  - विश्वविद्यालय–वित्तपोषित प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस
  - मानद प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस

4.2. शिक्षकों की पदोन्नति

- पिछले शैक्षणिक सत्र में कुल 185 संकाय पदोन्नतियाँ आयोजित की गईं।
- पहली बार, प्रोफेसर पद पर कार्यरत शिक्षकों को वरिष्ठ प्रोफेसर के पद पर पदोन्नत किया गया, जिसमें 56 शिक्षकों को यह पदोन्नति मिली।
- 54 शिक्षकों को प्रोफेसर, 29 को एसोसिएट प्रोफेसर और 44 को असिस्टेंट प्रोफेसर के विभिन्न ग्रेड पे पर पदोन्नत किया गया।

4.3. संविदा शिक्षकों के मानदेय में वृद्धि

- विश्वविद्यालय ने संविदा शिक्षकों के मासिक मानदेय में रु 35,000 से बढ़ाकर रु 57,700 की पर्याप्त वृद्धि को मंजूरी दी। यह निर्णय शिक्षक कल्याण और शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

4.4. गैर–शिक्षण कर्मचारियों की नियुक्ति

- अनुकंपा नियुक्तियों के लंबे समय से लंबित मामलों की समीक्षा की गई और प्राथमिकता के आधार पर उनका निस्तारण किया गया।
- मृतक कर्मचारियों के बीस पात्र आश्रितों को नियुक्त किया गया, जिससे उन्हें समय पर वित्तीय सुरक्षा मिली और कर्मचारी कल्याण के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता प्रदर्शित हुई।

5. भावी छात्रों को जोड़ना और प्रवेश मानक

5.1. प्रवेश आवेदनो में वृद्धि

- विश्वविद्यालय के प्रवेश आवेदनों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जो इसकी बढ़ती लोकप्रियता और शैक्षणिक प्रतिष्ठा को दर्शाती है। इस वृद्धि का श्रेय विभिन्न कारकों को दिया जा सकता है, जिनमें अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों को बढ़ाने, अनुसंधान के अवसरों का विस्तार करने और उद्योग सहयोग को बढ़ावा देने के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता शामिल है।

- सीटों के लिए मांग अनुपात

पाठ्यक्रम	अनुपात
एलएल.एम.	1:44
एलएल.बी. 5 वर्षीय	1:20
एलएल.बी. 3 वर्षीय	1:17
एम.एससी. प्राणीशास्त्र	1:15
एम.एड.	1:14
बी.एससी. जीव विज्ञान	1:13
बी.कॉम. ऑनर्स	1:12
एम.एससी. बायोटेक्नोलॉजी	1:6
एम.ए. राजनीति विज्ञान	1:6
बी.कॉम.	1:4
एम.फार्मा	1:3.5
एम.कॉम	1:3.2
एम.बी.ए. (सभी)	1:3

5.2. छात्रों तक पहुँच बढ़ाना और प्रवेश प्रक्रियाओं का मानकीकरण

- **राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षाओं को अपनाना:** राष्ट्रीय मानकों के साथ प्रवेश प्रक्रिया को संरेखित करने के लिए, विश्वविद्यालय ने मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षाओं को प्राथमिकता देने का निर्णय लिया है।
  - एम.बी.ए. कार्यक्रम में प्रवेश कैट स्कोर के आधार पर होगा,
  - स्नातक विधि प्रवेश क्लैट स्कोर के आधार पर होंगे।
  - पीएच.डी. प्रवेश में, राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं में अर्हता प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जाती है, तथा विश्वविद्यालय केवल बची हुई सीटों के लिए ही अपनी प्रवेश परीक्षा आयोजित करेगा है।
- **छात्र प्रवेश क्षमता का विस्तार:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक कार्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला में 3,350 से अधिक सीटों की वृद्धि की, जिससे उच्च शिक्षा तक पहुँच बढ़ी और अध्ययन के उभरते क्षेत्रों को समर्थन मिला।

6. छात्र क्षमता को निखारना और कल्याण पहल

छात्र–केंद्रित सीखने के तरीके में छात्रों को अपनी बात कहने, अपनी पसंद चुनने, आगे बढ़ने और उनकी जरूरतों पर नजर रखने का मौका दिया जाता है। पाँच हिस्सों वाला एक बेहतर मॉडल जिसमें छात्रों से बातचीत, आर्थिक मदद, छात्रों की भागीदारी, प्लेसमेंट और एंटरप्रेन्योरशिप, तथा मेंटरिंग जैसी पहल शामिल हैं छात्रों के सर्वांगीण विकास में योगदान देता है। लखनऊ विश्वविद्यालय ने ऐसी कई योजनाएँ और नए तरीके शुरू किए हैं जिनका मकसद एक ऐसा छात्र–केंद्रित सिस्टम बनाना है, जिससे छात्र अपनी पसंद के क्षेत्रों में आगे बढ़ सकें और बेहतर प्रदर्शन कर सकें, साथ ही उन्हें लगातार सीखते रहने के लिए प्रोत्साहित भी किया जा सके। ये पहल सरकार की नई शिक्षा नीति 2020 की उन गाइडलाइंस के अनुरूप हैं, जिनका लक्ष्य सर्वांगीण शिक्षा, नौकरी के योग्य स्नातक तैयार करना और एक

टिकाऊ उच्च शिक्षा प्रणाली बनाना है। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस दिशा में विश्वविद्यालय द्वारा की गई पहलों को दिखाती हैं।

6.1. छात्रवृत्ति सुविधा और मेंटर आवंटन

- विश्वविद्यालय ने प्रवेश के तुरंत बाद छात्रवृत्ति आवेदन प्रक्रिया शुरू करके छात्र सहायता को सुगम बना दिया है। छात्र केंद्रीय कार्यालय के बजाय अपने संबंधित संकायों के माध्यम से छात्रवृत्ति फॉर्म जमा कर सकते हैं।
- प्रत्येक नए प्रवेशित छात्र को शैक्षणिक मार्गदर्शन, करियर परामर्श और शैक्षणिक व व्यक्तिगत चिंताओं के समयबद्ध समाधान के लिए एक शिक्षक मार्गदर्शक भी आवंटित किया जाता है।

6.2. छात्रावास आवंटन और उपस्थिति

- अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए छात्रावास में बायोमेट्रिक उपस्थिति अनिवार्य कर दी गई है।
- छात्रावास आवंटन को शैक्षणिक भागीदारी से जोड़ा जाएगा, जिसमें कम से कम 75 प्रतिशत उपस्थिति बनाए रखने वाले छात्रों को प्राथमिकता दी जाएगी।

6.3. स्वास्थ्य और छात्रावास सुविधाएं

- **आरोग्य भवन के कार्य अवधिः** दवाओं की बेहतर उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय ने स्वास्थ्य केंद्र की कार्य अवधि का विस्तार किया है और डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड बनाने शुरू किए हैं।
- 2025–2026 में विश्वविद्यालय के बेड़े में **01 एम्बुलेंस** जोड़ी गई है।

- **हेल्थ कार्डः** विश्वविद्यालय छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों के लिए आवश्यक स्वास्थ्य–संबंधित जानकारी बनाए रखने और समय पर व उचित चिकित्सा देखभाल की सुविधा प्रदान करने के लिए एक व्यापक हेल्थ कार्ड विकसित कर रहा है। इस पहल में विभिन्न विश्वविद्यालय छात्रावासों के लगभग 2,500 छात्र शामिल होंगे, जिनमें लगभग 1,500 छात्राएं और

1,000 छात्र शामिल हैं। आरोग्य भवन में चिकित्सा सेवाओं के साथ एकीकृत, यह हेल्थ कार्ड रक्त समूह, एलर्जी, महत्वपूर्ण चिकित्सा इतिहास, पहले से मौजूद स्थितियों और अन्य प्रासंगिक स्वास्थ्य विवरण जैसी प्रमुख जानकारी दर्ज करेगा। मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण पर विशेष जोर दिया जाएगा, जिसमें तनाव की पहचान, उसको पैदा करने वाले कारक और उचित उपचारात्मक व सहायता उपाय शामिल हैं। इस पहल का उद्देश्य एक संरचित स्वास्थ्य सूचना प्रणाली तैयार करना है जो छात्रावास के विद्यार्थियों के लिए निवारक स्वास्थ्य सेवा, देखभाल की निरंतरता और प्रभावी चिकित्सा देखभाल का समर्थन करती है।

- **मानसिक स्वास्थ्य पहलः** विश्वविद्यालय ने छात्रों की आत्महत्या को रोकने के लिए एक विशेष टास्क फोर्स का गठन किया है, जिसका मुख्य ध्यान मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता, परामर्श और संस्थागत सहायता पर है। टास्क फोर्स जागरूकता अभियानों का समन्वय करेगी, मनोवैज्ञानिक परामर्श प्रदान करेगी, और तनाव की जल्द पहचान करने व प्रभावी ढंग से हस्तक्षेप करने के लिए शिक्षकों, छात्रावासों और छात्र समूहों को शामिल करेगी। यह पहल छात्रों के लिए एक सुरक्षित और अधिक सहायक वातावरण बनाने के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को दर्शाती है, साथ ही अन्य संस्थानों के लिए शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ–साथ छात्र कल्याण को प्राथमिकता देने के लिये प्रेरित भी करती है।
- छात्रावास की सफाई, स्वच्छता और भोजन की गुणवत्ता की नियमित निगरानी को मजबूत किया गया है, जबकि छात्रावास के बुनियादी ढांचे के विस्तार में तेजी लाई गई है।

6.4 खेल बुनियादी ढांचा

- खेल उत्कृष्टता को बढ़ावा देने और छात्र एथलीटों के लिए बेहतर प्रशिक्षण सुविधाएं प्रदान करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की टर्फ क्रिकेट विकेट का उद्घाटन भी इसी सत्र में किया गया।

6.5 शैक्षणिक निकायों में छात्रों की सहभागिता

- छात्र अब अध्ययन बोर्ड के सदस्य होंगे और अपनी शैक्षणिक पाठ्यक्रम सामग्री के संबंध में अपने सुझाव और राय व्यक्त कर सकेंगे।

6.6. प्लेसमेंट एवं उद्यमिता विकासः

- **केंद्रीय प्लेसमेंट सेल**
- दोनों परिसरों के छात्रों को त्वरित और विशिष्ट रोजगार के अवसर सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय के दोनों परिसरों के लिए अलग–अलग प्लेसमेंट सेल बनाए गए हैं।
- **मेगा प्लेसमेंट ड्राइव 2026**: पदभार ग्रहण करने के तुरंत बाद, कुलपति जी ने विश्वविद्यालय परिसर में एक मेगा प्लेसमेंट ड्राइव आयोजित करके छात्रों की रोजगार क्षमता बढ़ाने को प्राथमिकता दी। इस ड्राइव ने विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित नियोक्ताओं को आकर्षित किया और कई विषयों के छात्रों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न किए। भाग लेने वाले संगठनों में एचडीबी फाइनेंशियल सर्विसेज, हार्ट टच होम हेल्थकेयर, फ्लिपकार्ट, सत्व ह्यूमन, अकाल इंफॉर्मेशन, कोजेंट सर्विसेज, एंट ह्यूमन सर्विसेज, सीवाई फ्यूचर, अन्नपूर्णा फाइनेंस, आरोहण फाइनेंशियल सर्विसेज, हितैची और एएस वर्ड ग्रुप शामिल थे। भर्ती लखनऊ, दिल्ली एनसीआर, गुरुग्राम, नोएडा, पुणे, मुंबई और वाराणसी में स्थित पदों के लिए की गई थी। छात्रों का चयन वरिष्ठ बिक्री अधिकारी, डेटा एंट्री ऑपरेटर, फील्ड क्रेडिट ऑफिसर, तकनीशियन और अन्य पेशेवर पदों सहित विभिन्न भूमिकाओं के लिए किया गया, जिससे विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूती मिली।

- **प्रबंधन प्रशिक्षण इंटर्नशिप कार्यक्रमः** उद्योग के अनुभव और व्यावहारिक सीखने को मजबूत करने के लिए, विश्वविद्यालय ने गैर–लाभकारी सेवा सत्कार फाउंडेशन के सहयोग से एक प्रबंधन प्रशिक्षण इंटर्नशिप कार्यक्रम शुरू किया। यह पहल विश्वविद्यालय और उससे संबद्ध कॉलेजों के छात्रों को निश्चित वजीफे (स्टाइपेंड) के साथ 30 से 90 दिनों की संरचित इंटर्नशिप प्रदान करती

है। यह कार्यक्रम छात्रों को स्नातक स्तर की पढ़ाई पूरी करने से पहले व्यावहारिक पेशेवर अनुभव प्राप्त करने, कार्यस्थल की दक्षता विकसित करने और अपनी रोजगार क्षमता में सुधार करने में सक्षम बनाता है।

7. छात्र संवर्धन पहल

7.1. छात्र शैक्षणिक भ्रमण

लखनऊ विश्वविद्यालय अपने छात्रों को रुचि के विभिन्न स्थानों जैसे अन्य विश्वविद्यालयों, उच्च शिक्षा संस्थानों, राष्ट्रीय उद्यानों, जनजातीय गाँवों, भूगर्भीय संरचनाओं, गाँवों, समुदायों आदि के भ्रमण के माध्यम से व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। एम.एड. के छात्रों ने हरिद्वार और देहरादून की तीन दिवसीय शैक्षणिक यात्रा की, जहाँ उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपराओं, योग अभ्यासों और सामाजिक उत्थान की गतिविधियों का अध्ययन किया। यात्रा के दौरान, उन्होंने भारतीय जीवनशैली, संस्कृति और उच्च शिक्षा व समाज में योग की भूमिका के

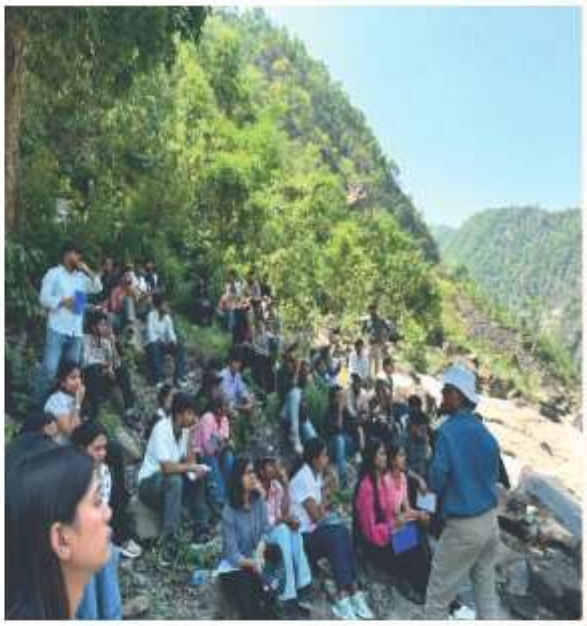

महत्व को समझने के लिए विभिन्न संस्थानों के साथ संवाद भी किया। इस यात्रा का उद्देश्य पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक शैक्षिक दृष्टिकोण से जोड़ना था। प्राणि विज्ञान विभाग के स्नातकोत्तर छात्रों ने राजस्थान का दौरा किया और जोरबीड़ में गिद्ध अभयारण्य का अवलोकन किया तथा जैसलमेर और जोधपुर में मरुस्थलीय पारिस्थितिकी प्रणालियों का अध्ययन किया। बी. एस.सी. (कृषि) के छात्रों ने नवीनतम तकनीकों के बारे में जानने के लिए मौनावंश (मधुमक्खी पालन) और मशरूम उत्पादन फार्मों का दौरा किया। इसके अलावा, छात्रों ने लखनऊ और आसपास के क्षेत्रों में जाकर स्वच्छता अभियान चलाया, साथ ही टीबी, एड्स, कैंसर, पोलियो, कुष्ठ रोग जैसी स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के प्रति लोगों में जागरूकता भी फैलाई।

7.2. सांस्कृतिक कार्यक्रम

2025–26 में, लखनऊ विश्वविद्यालय ने संस्कृतिकी और अधिष्ठाता छात्र कल्याण के माध्यम से शैक्षणिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक गतिविधियों की एक गतिशील श्रृंखला की मेजबानी की। लगभग 3,700 छात्रों ने वाद–विवाद, प्रश्नोत्तरी, पेंटिंग, पोस्टर और रंगोली निर्माण, गायन, नृत्य, कार्यक्रम प्रबंधन और बैंड प्रदर्शन जैसी प्रतियोगिताओं में भाग लिया। 68वाँ दीक्षांत सप्ताह एक प्रमुख आकर्षण था, जिसमें विभिन्न कार्यक्रमों में 963 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें 139 विजेता, 20 सांत्वना पुरस्कार और 59 बैंड प्रदर्शन शामिल थे।

छात्रों ने 147 प्रतियोगिताओं में पदक, ट्रॉफियां और पहचान हासिल कीं तथा क्षेत्र के प्रमुख संस्थानों और सांस्कृतिक मंचों पर विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। प्रमुख समारोहों में स्थापना दिवस, बाल दिवस, भारतीय गणित परिषद के कार्यक्रम, मकर संक्रांति, वाजपेयी स्मृति प्रतियोगिताएं, राज्य स्थापना दिवस और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रस्तुतियां शामिल थीं, जिनमें से सभी ने रचनात्मकता, नेतृत्व और संगठनात्मक कौशल का सराहनीय प्रदर्शन किया।

विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक टीमों ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित युवा महोत्सवों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल की। उन्होंने सम्बद्ध कॉलेजों के उत्सवों में ओवरऑल शील्ड हासिल की और जिला, जोनल तथा राज्य स्तर पर युवा संसद, वाद–विवाद और भाषण प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त की। छात्रावास के आयोजनों ने जीवंतता को और बढ़ाया, जिसमें वाद–विवाद, मुशायरा और अन्य कार्यक्रमों में ट्रॉफियां व जीत शामिल थीं। सामूहिक रूप से, ये उपलब्धियां विश्वविद्यालय की मजबूत सांस्कृतिक उपस्थिति और प्रतिभा को निखारने, नागरिक सहभागिता तथा छात्रों के समग्र विकास के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती हैं।

7.3 खेल आयोजन

2025–26 सत्र के दौरान, लखनऊ यूनिवर्सिटी एथलेटिक एसोसिएशन ने अपना अब तक का अपना सबसे सफल वर्ष दर्ज किया, जिसमें जोनल और ऑल–इंडिया इंटर–यूनिवर्सिटी टूर्नामेंट में 81 टीमों 42 पुरुषों की और 39 महिलाओं की टीमों की प्रभावशाली भागीदारी रही। विश्वविद्यालय ने जनवरी 2026 में आयोजित खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में भी अपनी मजबूत छाप छोड़ी, जहाँ 44 एथलीटों का अब तक का सबसे बड़ा दल उतरा जिसमें 25 रग्बी खिलाड़ी, 5 महिला भारोत्तोलक, 1 महिला पहलवान, एथलेटिक्स में 1 एथलीट और 12 टग–ऑफ–वॉर (रस्साकशी) खिलाड़ी शामिल थे। अखिल भारतीय स्तर पर, विश्वविद्यालय ने एथलेटिक्स में 1 स्वर्ण पदक, वुशू में 1 रजत पदक और कराटे में 5 रजत पदक के साथ उल्लेखनीय जीत हासिल की। इन उपलब्धियों को आगे बढ़ाते हुए, टीमों ने राज्य स्तर पर 14 स्वर्ण और 14 रजत पदक अपने नाम किए, जिससे कुल पदकों की संख्या बढ़कर 35 हो गई। विशेष रूप से, रग्बी टीम ने राष्ट्रीय रैंकिंग में सुधार करते हुए चौथा स्थान हासिल किया और शानदार प्रगति दिखाई, जबकि पुरुषों की क्रिकेट टीम जोनल स्तर पर प्री–क्वार्टर फाइनल तक पहुँची। अधिकांश अन्य टीमों ने भी प्री–क्वार्टर फाइनल या क्वार्टर फाइनल चरण में प्रवेश किया, जो विश्वविद्यालय की बढ़ती प्रतिस्पर्धी क्षमता को दर्शाता है। इस वर्ष की रिकॉर्ड भागीदारी, पदक जीत और सुधरी हुई रैंकिंग, शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ–साथ खेल उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को स्थापित करती है।

(क) वर्षा तंवर ने ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी वुशू चैम्पियनशिप में रजत पदक जीता।

(ख) रवि कुमार पाल ने ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीता।

8. परीक्षा और मूल्यांकन सुधार

8.1 ऑनलाइन मूल्यांकन: पीएच.डी. थीसिस और मौखिकी परीक्षा केवल ऑनलाइन मोड में आयोजित की जाएगी।

8.2 अंकन और मूल्यांकन सुधार: उत्तर पुस्तिकाओं की समय पर जांच के लिए मुख्य परीक्षकों की नियुक्ति की गई है। निष्पक्ष और पारदर्शी मूल्यांकन सुनिश्चित करने के लिए मॉडल उत्तर रूब्रिक के माध्यम से एक संरचित चरणबद्ध अंक प्रणाली शुरू की गई है। प्रति परीक्षक प्रतिदिन न्यूनतम 50 उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

8.3. कड़े परीक्षा नियम

- अनुचित साधनों के उपयोग और उससे जुड़े मुद्दों की अवधारणा व परिभाषा को पुनर्गठित करके अधिक औपचारिक स्पष्टता दी गई है।
- नकल के दायरे को बढ़ाते हुए इसमें मोबाइल फोन, ब्लूटूथ डिवाइस और अन्य इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के इस्तेमाल को शामिल किया गया है, और परीक्षा हॉल के अंदर इन सभी पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया है।
- परीक्षा केंद्रों में बाहरी और अनधिकृत व्यक्तियों के प्रवेश को प्रतिबंधित कर दिया गया है, तथा अभ्यर्थियों की मदद करते पाए जाने वाले कर्मचारियों के खिलाफ सख्त अनुशासनात्मक और कानूनी कार्रवाई की जाएगी।
- विश्वविद्यालय ने अनुचित साधनों के अपराध की गंभीरता के आधार पर दंड को श्रेणियों में विभाजित किया है–
    - यदि कोई अभ्यर्थी विषय से संबंधित सामग्री अपने पास रखता पाया जाता है, लेकिन वह प्रश्नपत्र के प्रश्नों से संबंधित नहीं है, तो उस विशिष्ट विषय/पेपर की परीक्षा रद्द कर दी जाएगी।
    - यदि उत्तर पुस्तिका में नकल सामग्री का उपयोग किया गया पाया जाता है, तो पूरी सेमेस्टर या वार्षिक परीक्षा रद्द कर दी जाएगी।
    - उत्तर पुस्तिका को फाड़ना, कक्ष निरीक्षकों को धमकाना, या परीक्षा के बहिष्कार के लिए उकसाना विश्वविद्यालय से निष्कासन का कारण बन सकता है।
- यदि कोई छात्र उत्तर पुस्तिका लेकर भागने का प्रयास करता है, तो केंद्र अधीक्षक द्वारा उसके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई जाएगी।
- अनुचित साधनों के नियमों के प्रयोग और उसके बाद मिलने वाली सजा से असंतुष्ट छात्र नवगठित शिकायत निवारण प्रकोष्ठ से अपनी शिकायत के निवारण की मांग कर सकते हैं।
- सामूहिक नकल में संलिप्त पाए जाने वाले परीक्षा केंद्रों को काली सूची में डाल दिया जाएगा।
- प्रायोगिक परीक्षाएं सीसीटीवी निगरानी में आयोजित की जाएंगी, और फुटेज को तीन महीने तक सुरक्षित रखना अनिवार्य होगा।

- प्रवेश परीक्षाओं में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों को रु 300 के शुल्क पर प्रश्नपत्रों और अनंतिम उत्तर कुंजियों को चुनौती देने का अवसर प्रदान किया जाएगा।

09. आईसीटी पहल और डिजिटल गवर्नेंस

9.1 समर्थ ईआरपी पोर्टल का कार्यान्वयन

- एक एकीकृत डिजिटल शासन ढांचा स्थापित करने के लिए विश्वविद्यालय ने समर्थ ईआरपी प्रणाली के कार्यान्वयन का महत्वपूर्ण विस्तार किया है।
- पारदर्शी और कागजरहित प्रशासनिक व्यवस्था का समर्थन करते हुए विभागों को समर्थ पोर्टल के माध्यम से उपस्थिति दर्ज करने के निर्देश दिए गए।

9.2. ई–ऑफिस और ई–फाइलिंग प्रणाली

- प्रशासनिक दक्षता में सुधार करने और कागज–आधारित प्रक्रियाओं को कम करने के लिए विश्वविद्यालय ने एक व्यापक ई–ऑफिस वातावरण में परिवर्तन की नई शुरुआत की है।
- प्रशासनिक कार्यालयों में इलेक्ट्रॉनिक फाइल प्रबंधन और ई–फाइलिंग के कार्यान्वयन के लिए निर्देश जारी किए गए हैं, जिससे तेजी से निर्णय लेने, बेहतर रिकॉर्ड प्रबंधन और जवाबदेही में वृद्धि संभव हो सकेगी।

9.3. संबद्धता प्रक्रिया हुई ऑनलाइन

- गुणवत्ता आश्वासन और पारदर्शिता में सुधार के लिए संबद्ध कॉलेजों का निरीक्षण और संबद्ध कॉलेजों में शिक्षकों की नियुक्ति को ऑनलाइन मोड में स्थानांतरित कर दिया गया है।
- 3 फरवरी 2026 से शुरू होकर 57 कॉलेजों के 137 शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की सम्बद्धता के लिये ऑनलाइन निरीक्षण आयोजित किए गए।
- विश्वविद्यालय द्वारा 18 नए कॉलेजों को संबद्धता की मंजूरी दी गई।

9.4. लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम और डिजिटल लाइब्रेरी

- डिजिटल शिक्षण और अधिगम को मजबूत करने के लिए विश्वविद्यालय ने समर्थ के साथ उपलब्ध लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम को अपनाया है।
- शिक्षकों को कठिन विषयों के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं को कवर करने वाले द्विभाषी वीडियो व्याख्यान तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए शैक्षणिक संसाधनों तक व्यापक पहुँच प्रदान करने हेतु एक डिजिटल लाइब्रेरी भी स्थापित की जा रही है।

9.5 **परीक्षा**

- वर्ष 2025–2026 में, EASE पोर्टल के माध्यम से 26,721 मार्कशीट, डिग्री, माइग्रेशन सर्टिफिकेट आदि प्रोसेस किए गए हैं।

S.NO	PARTICULARS	COUNT
1.	Provisional Certificate Requests	6543
2.	Migration Requests	9827
3.	Migration Surrender Requests	28
4.	Duplicate Migration Requests	19
5.	Degree Requests	7809
6.	Duplicate Degree Requests	38
7.	Language Certificate Requests	222
8.	Transcript Requests	439
9.	Correction of Marksheet Requests	1657
10.	Degree Correction Requests	139

9.6 **शैक्षणिक बैंक ऑफ क्रेडिटः** 4,82,564 से अधिक छात्रों का पंजीकरण किया गया है।

9.7 **डिजीलॉकर पर अंकपत्र अपलोडः** 10.68 लाख से अधिक छात्रों के अंकपत्र डिजीलॉकर पर अपलोड किए गए हैं, जिसमें पिछले 11 वर्षों का आंकड़ा शामिल है।

9.8 **आईसीटी सक्षम संचार पहलः**

- आधिकारिक एक्स (X), यूट्यूब, इंस्टाग्राम और फेसबुक हैंडल के माध्यम से विश्वविद्यालय और उसके सभी विभागों एवं संस्थानों की सोशल मीडिया पर मजबूत उपस्थिति है।
- **मोबाइल ऐपः** विश्वविद्यालय ने अपना खुद का मोबाइल ऐप विकसित किया है और इसके 50,000 से अधिक डाउनलोड हो चुके हैं।
- विश्वविद्यालय का एक्स (X) हैंडल@lkouniv: (X) पर विश्वविद्यालय का अत्यधिक सक्रिय हैंडल है, जिसके 50,700 से अधिक फॉलोअर्स हैं।
- **यूट्यूब चैनलः** लखनऊ विश्वविद्यालय का अपना यूट्यूब चैनल 30 नवंबर 2020 को लॉन्च किया गया था और वर्तमान में 362 से अधिक वीडियो के साथ इसके 26,200 सब्सक्राइबर और 9,63,000 से अधिक व्यूज हैं।
- **वेबसाइटः** विश्वविद्यालय की वेबसाइट को अप्रैल 2020 में नवीनीकृत कर पुनः लॉन्च किया गया था। तब से अब तक इस पर 17.28 करोड़ विजिटर्स (आगंतुक) आ चुके हैं।

10. प्रशासनिक सुधार और नई नीतियां

10.1. प्रशासनिक अनुशासन को मजबूत करना

- प्रशासनिक अनुशासन को मजबूत करने और कार्यस्थल पर जवाबदेही में सुधार के लिए विभागों और संस्थानों में औचक निरीक्षण किए गए। अनाधिकृत अनुपस्थिति के खिलाफ उचित कार्रवाई की गई, जिससे समय की पाबंदी, दक्षता और संस्थागत कार्य संस्कृति में सुधार हुआ।

10.2 पांच दिवसीय कार्य सप्ताह की शुरुआतः

- उत्तर प्रदेश में इस प्रणाली को अपनाने वाला पहला राज्य विश्वविद्यालय बना, जो ऊर्जा संरक्षण और कर्मचारी कल्याण को बढ़ावा देता है।

10.3 वैधानिक शासन

- समय पर निर्णय लेने, प्रभावी शासन और वैधानिक आवश्यकताओं का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए कार्य परिषद, वित्त समिति, विद्या परिषद और गवर्निंग बोर्ड की नियमित बैठकें आयोजित की गईं।

10.4 कागजरहित प्रशासन

- सतत् विकास को बढ़ावा देने के लिए, विश्वविद्यालय ने संकल्प लिया कि आंतरिक संचार कार्यालय नोट्स के माध्यम से संसाधित किया जाएगा, जिससे कागज की खपत में कमी आएगी और प्रशासनिक दक्षता में सुधार होगा।

10.5 सतर्कता तंत्र

- संस्थागत पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक शासन को मजबूत करने के लिए कुलसचिव को सतर्कता अधिकारी के रूप में नियुक्त करने के निर्देश जारी किए गए।

10.6 नवीन निदेशक एवं प्रकोष्ठ का गठन

10.6.1 निदेशक, शोध

- एक जीवंत शोध पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के लिए विभागों और संकायों में शोध गतिविधियों का समन्वय और सुदृढ़ीकरण करने के लिए नियुक्त किया गया।
- विविध शैक्षणिक क्षेत्रों में अंतःविषय, बहु–विषयक और सहयोगात्मक शोध को बढ़ावा देना।
- शैक्षणिक संस्थानों, उद्योग और अन्य संगठनों के साथ शोध साझेदारी और सहयोग को सुविधाजनक बनाना।
- पूरे विश्वविद्यालय में शोध गतिविधियों, परिणामों और प्रभाव की निगरानी, दस्तावेजीकरण और मूल्यांकन करना।
- शोध की गुणवत्ता, दृश्यता और प्रभाव को बढ़ाने के लिए शोध नीतियों, पहलों और तंत्रों को विकसित और मजबूत करना।

- विश्वविद्यालय की शोध प्रोफ़ाइल को मजबूत करने के लिए शोध वित्तपोषण (फंडिंग), नवाचार और ज्ञान प्रसार के अवसरों को सुलभ बनाना।

10.6.2 निदेशक, इंटर्नशिप

- प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए विभागों और शैक्षणिक कार्यक्रमों में इंटर्नशिप गतिविधियों का समन्वय और उसे सरलीकरण करना।
- उद्योग, सरकारी निकायों, अनुसंधान संस्थानों और अन्य संगठनों के साथ संबंधों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण इंटर्नशिप के अवसरों को सुगम बनाना।
- पूरे विश्वविद्यालय में इंटर्नशिप योजना, कार्यान्वयन, निगरानी और दस्तावेजीकरण के लिए तंत्र विकसित करना।
- छात्रों के व्यावहारिक अनुभव और रोजगार क्षमता को बढ़ाने के लिए उद्योग–शिक्षाविद् जुड़ाव और अनुभवात्मक शिक्षण को बढ़ावा देना।
- प्रभावी निगरानी और मूल्यांकन के लिए छात्रों की भागीदारी, इंटर्नशिप भागीदारों, परिणामों और प्रभाव का आंकड़ा विकसित करना और उसे संकलित करना।
- छात्रों के शैक्षणिक, व्यावसायिक और करियर विकास के अनुरूप इंटर्नशिप के अवसरों का विस्तार करने और उन्हें मजबूत करने में विभागों का समर्थन करना।

10.6.3 निदेशक, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व

- संस्थागत विशेषज्ञता को सामाजिक और सामुदायिक आवश्यकताओं के साथ संरेखित करते हुए विश्वविद्यालय की सी.एस.आर. पहलों की योजना बनाना और उनका समन्वय करना।
- शिक्षा, अनुसंधान, कौशल विकास, स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामुदायिक कल्याण के लिए सी.एस.आर. सहायता जुटाने हेतु उद्योगों, कॉर्पोरेट संगठनों, सरकारी एजेंसियों और गैर–सरकारी संगठनों के साथ साझेदारी विकसित करना।
- प्रभावी कार्यान्वयन, मापने योग्य सामाजिक प्रभाव और दीर्घकालिक संस्थागत साझेदारी सुनिश्चित करने के लिए सी.एस.आर–समर्थित परियोजनाओं को सुगम बनाना, उनकी निगरानी करना और दस्तावेजीकरण करना।

10.6.4 बौद्धिक संपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ

- एक समर्पित बौद्धिक संपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ (जिसकी अध्यक्षता कुलपति करेंगे) पेटेंट दाखिल करने (फाइलिंग), लाइसेंसिंग, व्यवसायीकरण, विवाद निवारण और जागरूकता कार्यक्रमों की निगरानी करेगा।
- यह प्रकोष्ठ जैव विविधता और पारंपरिक ज्ञान का सम्मान करते हुए नवाचार को बढ़ावा देने, रचनाकारों के अधिकारों की रक्षा करने, न्यायसंगत लाभ–साझाकरण सुनिश्चित करने और राष्ट्रीय / वैश्विक आईपीआर प्रथाओं के साथ संरेखित करने के लिए स्थापित किया गया है।
- विश्वविद्यालय, शिक्षक, शोधकर्ताओं, कर्मचारियों, छात्रों, आगंतुक विद्वानों, सहयोगियों और वित्त पोषण एजेंसियों को शैक्षणिक और वित्तीय दोनों हितों के साथ योगदानकर्ता के रूप में मान्यता दी जाएगी।

- पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, औद्योगिक डिजाइन, आईसी लेआउट, पौधों की किस्में, बायोटेक आविष्कार, पारंपरिक ज्ञान, भौगोलिक संकेतक और कमीशन किए गए कार्य इस नीति के अंतर्गत कवर किए जाएंगे।

10.6.5 सतत विकास लक्ष्य प्रकोष्ठ

- सतत विकास लक्ष्य प्रकोष्ठ संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप विश्वविद्यालय–स्तरीय गतिविधियों का समन्वय और दस्तावेजीकरण करेगा तथा शिक्षक, छात्रों और अन्य हितधारकों के बीच जागरूकता, प्रशिक्षण और संवेदीकरण को बढ़ावा देगा।
- यह प्रकोष्ठ सतत विकास से संबंधित अंतर–विषयक अनुसंधान और समुदाय–आधारित परियोजनाओं को सुगम बनाएगा तथा शिक्षण, शोध और आउटरीच में स्थिरता के सिद्धांतों के अधिक से अधिक एकीकरण को प्रोत्साहित करेगा।
- 17 सतत विकास लक्ष्यों में विश्वविद्यालय के शोध योगदान को मानचित्रित और केंद्रित करने के लिए शोध पत्रों, थीसिस, शोध प्रबंधों परियोजनाओं और अन्य शैक्षणिक आउटपुट में शामिल करने हेतु 335 एस डी जी –संरेखित की वर्ड की एक व्यापक सूची विकसित की गई।
- यह प्रकोष्ठ विश्वविद्यालय के पारिस्थितिक पदचिह्न और संबंधित स्थिरता गतिविधियों के मूल्यांकन का समन्वय करेगा, जो संस्थागत स्थिरता पहलों की साक्ष्य–आधारित योजना और निगरानी का समर्थन करता है।
- यह वैश्विक स्थिरता एजेंडे में सहयोग, ज्ञान के आदान–प्रदान और व्यापक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्थिरता नेटवर्क के साथ जुड़ाव बनाए रखेगा।
- यह प्रकोष्ठ वैश्विक रैंकिंग और प्रभाव मूल्यांकनों के लिए डेटा और साक्ष्यों के संग्रह, दस्तावेजीकरण और तैयारी में सहायता करेगा। साइटेशन डेटाबेस में एस डी जी–संबंधित शोध की बेहतर खोज योग्यता से शोध की दृश्यता, संस्थागत रैंकिंग और एस डी जी –उन्मुख अनुसंधान में एक महत्वपूर्ण वैश्विक योगदानकर्ता के रूप में विश्वविद्यालय के कद को मजबूती मिलने की उम्मीद है।

10.6.6 शिकायत निवारण प्रकोष्ठ:

- परीक्षा में अनुचित साधनों से संबंधित मामलों और परीक्षा से जुड़ी अन्य शिकायतों के समाधान के लिए एक संरचित तंत्र प्रदान करने हेतु एक समर्पित शिकायत निवारण प्रकोष्ठ की स्थापना की गयी है।
- जो मामलों का त्वरित, पारदर्शी और समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करेगा, जिससे परीक्षा शिकायत निवारण प्रक्रिया में दक्षता और जवाबदेही में सुधार होगा।
- छात्रों और अन्य हितधारकों के बीच निष्पक्षता, निरंतरता और अधिक विश्वास को बढ़ावा देने के लिए परीक्षा से संबंधित मुद्दों की व्यवस्थित निगरानी और समाधान करेगा।

10.6.7 सामुदायिक शैक्षिक विकास प्रकोष्ठ

- वंचित समुदायों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, समुदाय–उन्मुख शैक्षिक, आउटरीच और कौशल विकास पहलों की योजना बनाएगा और उनका समन्वय करेगा।

- अनुभवात्मक अधिगम, सामाजिक जिम्मेदारी और सामाजिक प्रभाव को बढ़ावा देने के लिए समुदाय–आधारित परियोजनाओं में शिक्षकों और छात्रों की भागीदारी को प्रोत्साहित करेगा।
- आउटरीच गतिविधियों और उनके प्रभाव के दस्तावेजीकरण और मूल्यांकन के साथ–साथ सरकारी एजेंसियों, गैर–सरकारी संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों और स्थानीय समुदायों के साथ साझेदारी विकसित करेगा।

10.7 नई नीतियाँ

10.7.1 आई.पी.एम नीति

- विश्वविद्यालय ने नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा देने तथा विश्वविद्यालय में उत्पन्न बौद्धिक संपदा के स्वामित्व, संरक्षण और व्यवसायीकरण के लिए एक पारदर्शी ढाँचा प्रदान करने हेतु एक व्यापक आईपीआर नीति तैयार की है।
- बौद्धिक संपदा संरक्षण, पेटेंट दाखिल करने (फाइलिंग), लाइसेंसिंग, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और संबंधित मामलों की निगरानी के लिए एक बौद्धिक संपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है।
- पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, औद्योगिक डिजाइन, पौधों की किस्मों, बायोटेक्नोलॉजी आविष्कारों और पारंपरिक ज्ञान सहित बौद्धिक संपदा की पहचान, मूल्यांकन और संरक्षण के लिए संस्थागत तंत्र विकसित किए गए हैं।
- उद्योग संपर्क, लाइसेंसिंग, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और वित्त पोषण एजेंसियों व अन्य संगठनों के साथ संबंधों के माध्यम से विश्वविद्यालय के नवाचारों के पेटेंट दाखिल करने और व्यवसायीकरण को सुगम बनाया जा रहा है।
- शिक्षकों, शोधकर्ताओं, छात्रों और कर्मचारियों के बीच आईपीआर जागरूकता और क्षमता निर्माण के साथ–साथ आईपीआर–संबंधित शिकायतों, विवादों और उल्लंघन के मुद्दों को हल करने के तंत्र को प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- व्यवसायीकृत आईपीआर से न्यायसंगत राजस्व साझाकरण का प्रावधान तय किया गया है। जिसमें 60 प्रतिशत आविष्कारकों को, 20 प्रतिशत विश्वविद्यालय को और 20 प्रतिशत बौद्धिक संपदा कोष को' प्राप्त होगा, जिससे नवाचार को प्रोत्साहन मिलेगा और भविष्य की आईपीआर गतिविधियों को समर्थन मिलेगा।

10.7.2 सी.एस.आर. नीति

- विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय प्राथमिकताओं और सतत विकास लक्ष्यों के संरेखण में उद्योग जगत, कॉर्पोरेट घरानों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों) के साथ साझेदारी को मजबूत करने के उद्देश्य से 'पहली व्यापक सी.एस.आर. नीति' तैयार और कार्यान्वित की गयी है।
- इस नीति का उद्देश्य विश्वविद्यालय के बंदोबस्ती कोष, बुनियादी ढांचे के विकास, आधुनिक प्रयोगशालाओं, डिजिटल सुविधाओं, छात्रावासों और छात्र कल्याण के लिए पारदर्शी सीएसआर योगदान को सुगम बनाना है।
- इस नीति का उद्देश्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सेमीकंडक्टर, ग्रीन एनर्जी, साइबर सुरक्षा, हेल्थकेयर टेक्नोलॉजी और जलवायु परिवर्तन जैसे उभरते क्षेत्रों में अनुसंधान और नवाचार के लिए

(उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना सहित) सी.एस.आर. सहायता जुटाना है।

- इस नीति का उद्देश्य मेधावी और वंचित छात्रों के लिए छात्रवृत्ति, फेलोशिप और वित्तीय सहायता के साथ–साथ अनुसंधान अनुदान और शैक्षणिक पहलों को समर्थन देना है।
- इस नीति का उद्देश्य स्टार्टअप इनक्यूबेशन, सीड फंडिंग, उद्यमिता कार्यक्रमों, चेयरमैन प्रोफेसरशिप, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और उद्योग–शिक्षाविद् साझेदारी के माध्यम से नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देना है।

10.7.3 परामर्श नीति

- विश्वविद्यालय ने एक नई परामर्श (कंसल्टेंसी) नीति लागू की है, जो स्व–वित्तपोषित कार्यक्रमों के संकाय सदस्यों, पीएचडी–अर्हता प्राप्त शोधकर्ताओं और छात्रों सहित सभी संकाय सदस्यों को सरकारी और निजी क्षेत्र की परियोजनाओं के लिए परामर्श देने तथा अपनी व्यावसायिक विशेषज्ञता प्रदान करने में सक्षम बनाती है।
- नियमित संकाय से इतर परामर्श के अवसरों के विस्तार का प्रस्ताव करती है, जिससे वास्तविक दुनिया की समस्याओं पर शैक्षणिक विशेषज्ञता लागू करने के लिए एक व्यापक संस्थागत ढांचा तैयार होता है।
- व्यावसायिक परामर्श और सहयोगात्मक परियोजनाओं के माध्यम से विश्वविद्यालय–उद्योग तथा विश्वविद्यालय–सरकार के बीच जुड़ाव को मजबूत करना।
- परामर्श कार्य के लिए एक पारदर्शी राजस्व–साझाकरण तंत्र की शुरुआत, जिससे स्पष्ट रूप से परिभाषित दिशानिर्देशों के माध्यम से पूर्व में रही कमी को दूर किया गया है।
- विज्ञान और इंजीनियरिंग में '60:40' का राजस्व साझाकरण, जिसमें 60 प्रतिशत शिक्षक को और 40 प्रतिशत विश्वविद्यालय को' प्राप्त होगा।
- कला और अन्य संकायों में '70:30' का राजस्व साझाकरण, जिसमें 70 प्रतिशत शिक्षक को और 30 प्रतिशत विश्वविद्यालय को' प्राप्त होगा।

11. सम्बद्ध महाविद्यालयों से संबंध और वित्तीय सुदृढ़ीकरण

11.1 प्राचार्यों के साथ उच्च स्तरीय समन्वय बैठक

- एनईपी 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन और कदाचार मुक्त परीक्षाओं के लिए सहायता प्राप्त और सरकारी महाविद्यालयों के प्राचार्यों के साथ बैठक।

11.2 नैक और एन.आई.आर.एफ के लिए सहायता

- एन.आई.आर.एफ. के लिए आवेदन करने वाले कॉलेजों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

11.3. केंद्रीयकृत प्रवेश प्रक्रिया में वैकल्पिक भागीदारी

- संबद्ध सरकारी और सहायता प्राप्त महाविद्यालयों को पूरी तरह से स्वैच्छिक और निःशुल्क आधार पर विश्वविद्यालय की केंद्रीयकृत प्रवेश प्रक्रिया में शामिल होने का विकल्प प्रदान किया गया। इस पहल से पारदर्शिता में सुधार, प्रवेश प्रक्रिया के सरलीकरण और भावी छात्रों की पहुँच में वृद्धि की उम्मीद है।

12. वित्तीय स्थिति को मजबूती प्रदान करना

12.1. उन्नत अनुसंधान बुनियादी ढांचे का विकास

- रसायन शास्त्र विभाग में उन्नत वैज्ञानिक उपकरणों से लैस एक अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशाला स्थापित की गई। अन्य विभागों के लिए बुनियादी ढांचे के विकास और बजटीय सहायता के लिए एक चरणबद्ध रूपरेखा भी तैयार की गई।

12.2. पीएम–उषा के तहत व्याख्यान कक्ष क्षमता का विस्तार

- 75 या 150 छात्रों की क्षमता के हिसाब से व्याख्यान कक्षों को नया रूप दिया गया। शिक्षण बुनियादी ढांचे के इष्टतम उपयोग के लिए संशोधित लेआउट योजनाएं मांगी गईं।

12.3 विश्वविद्यालय की परामर्श नीति की शुरुआत

- विश्वविद्यालय ने अपनी पहली व्यापक परामर्श नीति को अपनाया, जिससे शिक्षकों को उद्योग, कॉर्पोरेट संगठनों और सरकारी एजेंसियों के साथ परामर्श कार्य करने की अनुमति मिली; जिससे ज्ञान के हस्तांतरण और आंतरिक राजस्व सृजन को बढ़ावा मिला।

12.4 वित्तीय प्रशासन को मजबूत करना

- केंद्रीय लेखा कार्यालय को निर्देश दिया गया है कि निर्धारित प्रशासनिक और वित्तीय स्वीकृति प्राप्त किए बिना कोई भी भुगतान संसाधित नहीं किया जाएगा, जिससे वित्तीय प्रबंधन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित हो सके।

12.5. आउटसोर्स कर्मियों के भुगतान की निगरानी

- प्रशासनिक इकाइयों को निर्देश दिया गया कि वे आउटसोर्स कर्मियों के लिए निर्धारित भुगतान मानदंडों का अनुपालन सुनिश्चित करें, जिसमें आवश्यकतानुसार अनुपूरक बिलों का समय पर जमा करना और नियमित मासिक भुगतान शामिल है।

13. सामुदायिक जुड़ाव को मजबूत करना

- बाराबंकी जिले के हसनपुर टांडा के छात्रों ने एक शैक्षणिक एक्सपोजर कार्यक्रम के तहत लखनऊ विश्वविद्यालय का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान, उन्होंने परिसर का भ्रमण किया, शिक्षकों के साथ बातचीत की और विश्वविद्यालय के शैक्षणिक माहौल, पाठ्यक्रमों और सुविधाओं के बारे में जाना। इस पहल का उद्देश्य युवाओं को उच्च शिक्षा के अवसरों से परिचित कराकर प्रेरित करना, उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करना और लखनऊ विश्वविद्यालय की समृद्ध सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विरासत से जोड़ने में मदद करना था। ऐसे आउटरीच कार्यक्रम न केवल छात्रों के दृष्टिकोण का विस्तार करते हैं, बल्कि स्कूलों और विश्वविद्यालयों के बीच के अंतर को भी कम करते हैं।
- गोद लिए गए गाँवों में स्वच्छता अभियान और टीबी रोगियों को पोषण किट का वितरण।
- समाज कार्य के छात्रों द्वारा ग्रामीण बच्चों का लामबंदी/प्रोत्साहन ।
- 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023' के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए गोद लिए गए गाँवों में प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- 'समर्पण दिवस' पर पुस्तक दान और 'अंत्योदय पुस्तक वाचनालय' की स्थापना।
- गोद लिए गए गाँवों के स्कूली छात्रों के लिए परिसर और टैगोर पुस्तकालय का भ्रमण।
- 'जन भवन' में आयोजित सब्जी एवं पुष्प प्रदर्शनी और स्वास्थ्य शिविर में ग्रामीण छात्रों व ग्रामीणों की भागीदारी।

- गाँवों में निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविरों का आयोजन।
- 'सेवा दूत' अभियान की शुरुआत और 'स्वस्थ महिला – सशक्त परिवार' पर जागरूकता, साथ ही ग्रामीण छात्रों और अभिभावकों का सम्मान।
- 'निक्षय मित्र' पहल के तहत पोषण संबंधी सहायता के लिए टीबी रोगियों को गोद लेना।
- विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह के दौरान गोद लिए गए गाँवों के प्रतिभाशाली छात्रों का अभिनंदन।
- दीक्षांत सप्ताह के दौरान गाँव के स्कूलों में पर्यावरण और स्वच्छ भारत विषय पर भाषण, कहानी लेखन और चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- गाँव के बच्चों और शिक्षकों द्वारा 'एक देश नेक देश–प्रगति पथ पर हमारा देश' थीम पर आधारित राष्ट्रीय स्तर की साइकिल रैली का स्वागत।
- दहेज प्रथा और नशाखोरी के खिलाफ जागरूकता और शपथ ग्रहण कार्यक्रम ('दहेज नहीं लेंगे, नहीं देंगे' और 'नशा मुक्त समाज')।
- 'समर्पण दिवस' पर 'निक्षय मित्र' पहल के तहत गहन 100 दिवसीय टीबी अभियान।

14. रैंकिंग और मान्यता

बेहतर बनने और नई ऊंचाइयां हासिल करने की हमारी कोशिश का मकसद अपनी प्रतिबद्धता के लिए राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर पहचान बनाना है। हमारी इन सभी उपलब्धियों की वजह से हमें बेहतर रैंकिंग मिली है और उसमें सुधार हुआ है।

Ranking	Current Rank (2025-2026)
QS Asia University Ranking	781-790
QS South Asia University Ranking	244
QS Sustainability Ranking	1501+
Times Higher Education (World)	1501+
Times Higher Education (Asia)	601-800
Uni Rank (Universities)	44*
Scimago Institutions Rankings	1208 (Asia) 7479 (Global)
Webometrics Ranking of World Universities	81 (Country Rank) 2709 (Global Rank)
IIRF (University)	5*
IIRF (Law)	24*
IIRF (MBA)	42*
IIRF (BBA)	33*
India Today	11*
NIRF (Universities)	98*
NIRF (Public Funded)	27*
NIRF (Law)	29*
NIRF (Management)	100*

website : https://www.lkouniv.ac.in/

Name of institution	:	University of Lucknow
Established	:	1920
City	:	Lucknow
State	:	Uttar Pradesh
Country	:	India
Latitude & Longitude	:	26.862, 80.936
Postal Address	:	University of Lucknow, Lucknow 226007, UP, India
email	:	vc@lkouniv.ac.in
website	:	www.lkouniv.ac.in
YouTube	:	https://youtube.com/c/UniversityofLucknow_Official
Twitter	:	@lkouniv